National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(66): 183-186
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

सुधांशु शेखर झा
जामिया मिल्लिया इस्लामिया,
नई दिल्ली

Correspondence:
सुधांशु शेखर झा
जामिया मिल्लिया इस्लामिया,
नई दिल्ली

औपनिषदिक नीतिशास्त्र का स्वरूप एवं समसामयिक उपयोग

सुधांशु शेखर झा

नीतिशास्त्र वह शास्त्र है जो व्यक्ति को उचित-अनुचित, और धर्म-अधर्म के मध्य का विवेक (बुद्धि) प्रदान कर श्रेष्ठकार्यों हेतु प्रवृत्त करता है।जिससे वह आत्मा,समाज एवं सृष्टि के प्रति अपने व्यवहार को सम्यक रूप से निभा सके। यह सत्य, अहिंसा जैसे नैतिक मूल्यों पर आधारित जीवन जीने की कला है।नीति केवल नियमों का संग्रह नहीं अपितु जीवन जीने की वह शैली है जो पीढ़ियों के आचरण, अनुभव एवं विवेक द्वारा विकसित होता है। श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं कि:-

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेत्तरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।[1]

इस प्रकार श्रीकृष्ण कहते हैं कि जो महत जनों द्वारा उपदेशित एवं आचरित जो मार्ग होता है वही श्रेष्ठ मार्ग होता है एवं अन्य जन उसी पथ का अनुगमन करते हैं,अत :हमे महतजनों द्वारा आचरित मार्ग का हि अनुसरण करना चाहिए । स्वयं महाभारत के रचनाकार वेदव्यास जी लिखते हैं कि:

महाजनो येन गतः स पन्थाः।[2]

अर्थात विद्वतजनों द्वारा जो मार्ग अपनाया गयाहै वहीं मार्ग श्रेयस्कर है,वहीं सत्य है, वहीं धर्म का मार्ग है वही नीति है एवं हमें उसी का पालन करना चाहिए।उपनिषद में भी इसी प्रकार नीतियों की अनेक चर्चा देखने को मिलती है । नीति को बताते हुए तैत्तिरीयोपनिषद में कहा गया है कि :

एष आदेशः । एष उपदेशः । एषा वेदोपनिषत् । एतदनुशासनम् । एवमुपासितव्यम् । एवमु चैतदुपास्यम्।[3]

यहां गुरु शिष्य को बताते है कि जब तुम्हें स्वयं से सही मार्ग का ज्ञान न हो अथवा तुम्हे अपने निर्णय में शंका हो तो तुम वेद विहित एवं गुरुजनों द्वारा आचरित मार्ग का ही अनुपालन करना। यही श्रेयस्कर होता है एवं हमें उसी का पालन करना चाहिए।

इसी प्रकार की बात वा नैतिक सिद्धांत को कठोपनिषद में श्रेय एवं प्रेय मार्ग कहकर बताया गया। अर्थात जो मार्ग आत्मोन्नति का मार्ग है वह श्रेय मार्ग है ,श्रेय मार्ग कठिन तो लगता है पर कल्याण का मार्ग यही है, साधारण जन साधारण रास्ते को अपनाते है , वे इंद्रियों के वशीभूत होते है ओर मनमानी आचरण करते है ,यही कारण है कि श्रेय मार्ग का चयन केवल ज्ञानी जन ही कर पाते है । जिन्होंने अपने तप , श्रम एवं साधना से अपने मन को साध लिया है । इस प्रकार के लोग अपने इन्द्रियों के वशीभूत नहीं होते अपितु अपने जीवन का एक अनुशासन रखते है एवं उसका निर्वहन करते है।

इस प्रकार के लोग सभी से आत्मवत व्यवहार करते है।इनसे इतर जो भी मार्ग है वह प्रेय मार्ग है जो व्यक्ति के आत्मोन्नति में बाधक बनती है।इस मार्ग पर चलने वाले लोग केवल इंद्रियों के सुख के पीछे लगे होते है। उन्हे भविष्य की चिंता नहीं होती , वे केवल वर्तमान क सुख ओर भोग की सोचते है एवं इंद्रिय सुख में ही जीवन का बहुमूल्य अवसर को गवां बैठते है।जिस अवसर का वो सदुपयोग कर अनेक ऊंचाइयों को पा सकते थे।

ज्ञानी जन श्रेय एवं प्रेय मार्ग को जानकर ही व्यवहार करते है। इसी श्रेय एवं प्रेय के ज्ञान को विवेक कहते है।

इस प्रकार औपनिषदिक नीतिशास्त्र वह शास्त्र है जो आत्मा की पवित्रता, ब्रह्म की सर्वव्यापकता एवं मनुष्य के कर्तव्यबोध पर आधारित है। उपनिषद न केवल आत्मा एवं ब्रह्मा की व्याख्या करता है अपितु मानवीय कर्तव्यों एवं मूल्यों का भी नैतिक आधार पर विवेचन करता है।

औपनिषदिक नीतिशास्त्र का स्वरूप :-

आत्मा-केंद्रित नैतिकता :- उपनिषद आत्मा को सत्य एवं मूल चेतना मानते है।

आत्मा वा अरे द्रष्टव्या" - वृहदारण्यक उपनिषद। यहां नैतिकता आत्मा की खोज, उसकी अनुभूति एवं उससे अभिन्नता पर आधारित है।यहां याज्ञवल्यक ऋषि बताते है कि-

केवाल आत्मा ही जानने योग्य है एवं उसी के ज्ञान से परमानंद की प्राप्ति वा शांति की अनुभूति हो सकती है।

कर्तव्य -बोध का उद्गम - ज्ञान से

"नायामात्मा प्रवचनेन लभ्यो..." कठोपनिषद।[4]

आत्मोन्नति किसी सामाजिक अनुशासन मात्र से नहीं होता अपितु ज्ञान, तप एवं श्रवण-मनन-निधिध्यासन से उत्पन्न होता है।

प्रकृत का सिद्धांत (Cosmic order)

प्रकृत कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था है, जिसके अनुरूप जीवन जीना नैतिक कर्तव्य है। ब्रह्मांडीय व्यवस्था का पालन सदा से श्रेयस्कर रहा है ।प्रकृति के दोहन से संबंधित जितनी भी घटनाए है उनके मूल में यही है की हम प्रकृति के नियमों व उसके अस्तित्व का सम्मान नहीं करते ओर प्रकृति के साथ अपने भोग हेतु मनमानी आचरण करते है ।

ऋतेन सत्यमुपासते - तैत्तिरीय उपनिषद् [5]

<u>पर्यावरणीय नैतिकता:</u>

"तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥" - व्यक्ति को प्रकृति में उपलब्द संसाधनों का ज्ञानपूर्वक ,विचार व विवेकपूर्वक उपयोग करना चाहिए ।उपनिषद संसाधनों के उपभोग पर अंकुश लगाने की बात नहीं करता अपितु उसके सही प्रकार से भोग करने की बात करता है । इस प्रकार उपनिषद पर्यावरण के संरक्षण की भी बात करता है।

<u>सर्वभूत समता:</u>

"सर्व खल्विदं ब्रह्मा" -छोदोग्य उपनिषद[6]

यह सह-अस्तित्व की बात करता है।आज का समाज जहां जाती, धर्म, लिंग, रंग देश में बंटा हुआ है वही, उपनिषद सब के अस्तित्व को एक समान सभी के सामर्थ्य को एक समान बताता है ।उपनिषद का ये विचार समता के विचार को सुदृढ़ करता है ।

<u>औपनिषदिक नीतिशास्त्र की समसमयायिक उपयोग</u>

ऋत

ऋत अर्थात् ब्रह्माण्डीय व्यवस्था। ब्रह्मांड की सभी व्यवस्था एक दूसरे से जुडी हुई है। तैतिरिय उपनिषद में कहा गया है कि :

तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः।
आकाशाद्वायुः।
वायोरग्निः।
अग्नेरापः।
अद्भ्यः पृथिवी।
पृथिव्या ओषधयः।
ओषधीभ्योऽन्नम्।
अन्नात् पुरुषः॥

इस प्रकार उपनिषद बताती है कि प्रकृति के सभी अव्यय एक दूसरे से जुडी हुई है। उपनिषद की यह दृष्टि बताती है कि यदि प्रकृति के किसी भी अब्यव का अतिदोहन होगा तो उसका प्रभाव अन्यों पर भी पड़ेगा, क्योंकी सभी आपस में जुड़े हुए है एवं सभी के मूल में वहीं परमेश्वर परम ब्रह्म है।इस प्रकार उपनिषद प्रकृति के हर एक तत्व की सम्मान की बात करता है।

उपनिषद की यह दृष्टि **जैवविविधता एवं पर्यावरणीय न्याय जो** सभी के अधिकार के संरक्षण की बात करती है, इस दृष्टि से अत्यन्त प्रसांगिक है।

वैश्विक शांति एवं समरसता :-

वैश्विक शांति एवं समरसता का भाव सामान्यतः सभी उपनिषद में प्राप्त होते है। ईशावास्योपनिषद में कहा गया है कि:~

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति ।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥

इसी प्रकार छांदोग्य उपनिषद करता है कि:-

सर्व खल्विदं ब्रह्म।[7]

अर्थात् सब कुछ में ब्रह्म ही है। सब कुछ में पपरमेश्वर का ही निवास है। हर वस्तु, व्यक्ति में एक ही चेतना के अंश है। यह भाव द्वेष, **भेदभाव, हिंसा एवं उपभोगवादी मानसिकता के** विरुध्द है।इस प्रकार की भावना समाज को जोड़ने में बहुत ही लाभकारी है। आज का समाज जहां आगे बढ़ने की आकांक्षा में लोगों को कम दिखाना चाहते है और स्वयं सर्वाधिक सम्मानित व्यक्ति के तौर पर देखते है यह यह भाव आपस में जुड कर सद्भाव से रहने की बात करता है।

<u>सर्व खल्विदं ब्रह्म - यह</u> विचार वर्तमान के दौर में हो रहे युद्ध जैसी घटना को रोकने में सक्षम है यदि इस विचार को आत्मसात किया जाये। चूंकि,युद्ध दो देश, व्यक्ति के मध्य होता है पर ये विचार कहता है कि हम सब एक है ।हम सभी में वही ब्रह्म समाया है अतः यह विचार **युद्ध एवं आपसी टकराव'** को रोकने में सक्षम है। युद्ध या संघर्ष' किसी अन्य के विरुद्ध नहीं हो सकता क्योंकी' कोई अन्य है ही नहीं। सभी एक ही है एवं सभी में वहीं परमतत्व समय हुआ है।यह विचार अहिंसा, टकराव के बजाय संवाद एवं वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को जन्म देती है। वैश्विक शांति एवं समरसता एवं विश्वबंधुत्व की भाव को द्योतित करती है।

व्यक्तित्व विकास :

व्यक्ति अपने विचारों का परिणाम है। वह जैसा सोचता है वैसा होता जाता है। अतः उपनिषद अच्छे विचारों को उपदेशित कर व्यक्तित्व विकास की बात करती है। **तैत्तिरीयोपनिषद में कहा गया है कि :-**

शरीर में विचर्षणम्।
जिह्वा में मधुमत्तमा।
यशोजनेऽसानि स्वाहा।
सत्याम प्रमादितलाम। वर्मान प्रमादिताम्।
कुशलासन प्रमादितत्यम्।[8]

उपनिषद कहता है कि व्यक्ति को अपना छोटे-छोटे लक्ष्य नहीं रखना चाहिए। बड़ा लक्ष्य होना चाहिए एवं जीवन प्रमाद वा आलस्य रहित होना चाहिए। जीवन में सत्य, धर्म वा आत्मविकास से संबंधित निर्णय लेने में प्रमाद नहीं करना चाहिए।

वर्तमान के समाज में व्यक्ति को व्यक्तित्व का नैतिक पतन बढ़ता जा रहा है। उनका झुकाव केवल धनार्जन है। धनार्जन हेतु वे किसी भी नैतिक मूल्यों का सम्मान नहीं करते एवं उनके व्यक्तित्व का विकास नहीं होता। उपनिषद का यह विचार समाज को सुपथ पर ले जाने हेतु वर्तमान संदर्भ मेंअत्यंत प्रसांगिक है

परोपकार एवं करुणा :-

उपनिषद सभी के कल्याण की बात करता है। उपनिषद कहता है कि मनुष्य को अपनी क्षमता के अनुसार समाज में दान करना चाहिए। दान की महत्वता को बताते हुई **तैत्तिरीयोपनिषद् में कहा** गया है कि:-

श्रद्धया देयम्। अश्रद्धयादेयम्।[9]
श्रिया देयम्। ह्रिया देयम्।
भिया देयम्। संविदा देयम्।[10]

अर्थात व्यक्ति को अपने स्वविवेक से अपने हिस्से के अर्थ का कुछ भाग स्वेच्छा पूर्वक दान करना चाहिए।ये दान दंभ में न हो,श्रद्धा के साथ किया गया दान ही फलीभूत होता है।इस प्रकार उपनिषद विनम्र होने की भी बात करता है।

आज सरकार **कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के** माध्यम से बड़े उद्योगपतियो को अपने आय के कुछ भाग को समाज के कल्याण हेतु दान करने की बात करता है। उपनिषद इस अवधारणा को पूर्व से ही उपदेशित कर रहा है। इस प्रकार उपनिषद एक कालातीत ज्ञान है जो सर्वदा प्रसांगिक है।

संकल्प के प्रति दृढ़ता:-

जब यमराज नचिकेता को अनेक प्रकार के प्रलोभन को देता है जिससे वह अपने लक्ष्य (अग्निविद्या) के प्रति दृढ़ता कम हो जाए किंतु नचिकेता अपने बात पर अडिग रहा एवं किसी प्रलोभन में नहीं आया। उसने **श्रेय एवं प्रेय मार्ग** में से श्रेय मार्ग को चुना। वह प्रलोभनों को सुनकर कहता है कि:

"न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो"[11]

अर्थात् धनादि से कभी मनुष्य को तृप्त नहीं किया जा सकता।

नचिकेता का यह व्यवहार के माध्यम से उपनिषद शिक्षा देती है कि हमें अपने लक्ष्य के प्रति स्पष्टता होनी चाहिए एवं उसी के प्रति समर्पित रहना चाहिए।

आज का समाज छोटे-छोटे प्रलोभनों मे फंसकर अपने लक्ष्य को ही भूल जाता है।वो चल तो रहा होता है किंतु दिशा का ज्ञान नहीं होता क्योंकि लक्ष्य के प्रति न श्रद्धा होती है न स्वयं पर विश्वास। अत: नचिकेता के लक्ष्य के प्रति समर्पण का भाव आज के युवा पीढ़ी हेतु अत्यंत प्रसांगिक है।

सतत विकास एवं पर्यावरणीय नैतिकता :-

ईशावास्योपनिषद का प्रथम मंत्र

उपनिषद सभी के हित एवं कल्याण की बात करता है। ईशावास्योपनिषद के प्रथम मंत्र में ही कहा गया है कि :-

ॐ ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।।[12]

अर्थात् इस संसार में जो कुछ भी है उस में ईश्वर का निवास है। मनुष्य को संसाधनों का त्यागपूर्वक , विचारपूर्वक उपभोग करना चाहिए। संसाधनों के प्रति लालच पूर्ण व्यवहार नहीं होना चाहिए। प्रकृति के प्रति अपनत्व का भाव होना चाहिए।

उपनिषद की यह दृष्टि वर्तमान के **सतत विकास की अवधारणा की पुष्टि करता है। जिसमें कहा गया है कि हम संसाधनों का उपयोग अपनी आवश्यकतानुसार ही करें एवं अपनी भावी पीढ़ियों की भी जरूरतों की चिंता करें।**

इसी प्रकार **पर्यावरणीय नैतिकता का** सिद्धांत भी प्रकृति के प्रति अपनत्व का भाव रखने को कहते हैं। यह मंत्र सतत विकास एवं पर्यावरणीय नैतिकता की भी पुष्टि कर पर्यावरण के संरक्षण वा संवर्धन हेतु प्रेरित करता है।

प्रशासनिक नैतिकता:

धर्म एवं सत्य हमेशा समाज को सुपथ पर ले जाता है। उपनिषद् सत्य एवं धर्म की महत्वता को बताते हुए **तैत्तिरीयोपनिषद में कहा गया** है कि–

सत्यं वद। धर्मं चर।[13]

अर्थात सत्य बोलो व धर्म का अनुगमन करो। धर्म व्यक्ति पर अंकुश लगाता है एवं व्यवस्थित करता है। यह केवल उपदेश नहीं अपितु व्यावहारिक नैतिक मार्गदर्शन है, विशेष रूप से उनके लिए जो **जनहित, न्याय एवं जवाबदेही से जुड़े कार्य करते हैं।**

यह दृष्टि आज के प्रशासनिक व्यवस्था में अत्यन्त प्रासंगिक है। प्रशासनिक सेवा का मूल दायित्व है सच को बताना एवं धर्म (कर्तव्य) निष्पक्ष निर्णय करना।

धर्म चर का भाव **भ्रष्टाचार जैसे विचार** पर अंकुश लगाता है तो सत्यं वद अन्याय पर न्याय की विजय सुनिश्चित करता है।इस प्रकार धर्म एवं सत्य व्यक्ति व समाज को व्यवस्थित करता है। अतः उपनिषद की यह बात सर्वदा प्रासंगिक है।

निर्भयता :-

निर्भयता के मूल में है **ज्ञान**। ज्ञान व्यक्ति को निर्भयता प्रदान करता है। निर्भयता व्यक्ति में विकास को विश्वास को बढ़ाता है। **कठोपनिषद में यमराज नचिकेता को आत्मा के विषय में बताते हुए कहते है कि:-**

न जायते प्रियते वा विपश्चि-
न्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित् ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ ॥[14]

इस प्रकार यह श्लोक व्यक्ति को आत्मबोध हेतु प्रेरित करता है।जिस प्रकार नचिकेता सत्य के ज्ञान हेतु यमराज से टकरा गया, उसे अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ता थी ,यही कारण था की वो अनेक प्रलोभनों के बावजूद वह अपनी बातों पर अडिग रहा । वैसे ही आज के युवा को भी जो मोबाईल ,और सोशल मीडिया के जाल में फंसकर अपने लक्ष्य से भटक जाते है ,उन युवाओ के लिए यमराज ओर नचिकेता की यह संवाद सर्वदा प्रासंगिक है । आज का युवा जहाँ अपने अस्तित्व के प्रश्न को लेकर चिंतित रहता है वहां यह श्लोक आत्मबल एवं निर्भयता प्रदान कर आगे बढ़नेको प्रेरित करता है।

निष्कर्ष

ओपनिषदिक नीतिशास्त्र केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शन का स्रोत नहीं है बल्कि ,यह आज के जटिल सामाजिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्य में भी अत्यंत प्रासंगिक है। सत्य, अहिंसा, धर्म, आत्मज्ञान, कर्तव्यनिष्ठा और समत्व जैसे मूल्यों की शिक्षा न केवल व्यक्ति के आत्म-विकास को दिशा देती है, बल्कि समाज में नैतिकता, सहिष्णुता और न्याय की स्थापना में भी सहायक होती है।

वर्तमान युग की भौतिकतावादी और उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों के बीच उपनिषदों की शिक्षाएं आत्मसंयम, विवेक और नैतिक जीवन का स्मरण कराती हैं। अतः ओपनिषदिक नीतिशास्त्र आधुनिक समय में भी एक आदर्श जीवन पद्धति और नीति-निर्देशक दर्शन के रूप में अत्यंत उपयोगी और आवश्यक है।

संदर्भग्रंथ

1. यद् यदाचरति श्रेष्ठस्तत तदेवेतरो जनः..

➢ श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 3, श्लोक 21

2. महाजनो येन गतः स पन्थाः

➢ महाभारत, वनपर्व, 313.117

3. अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात्...

➢ तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली, अनुवाक 1.11

4. एष आदेशः । एष उपदेशः । एषा वेदोपनिषत्...

➢ तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली, अनुवाक 11

5. ॐ ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्...

➢ ईशावास्योपनिषद्, मंत्र 1

6. तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः...

➢ तैत्तिरीयोपनिषद्, भृगुवल्ली, अनुवाक 1, मंत्र 1

7. न जायते म्रियते वा विपश्चित्...

➢ कठोपनिषद्, अध्याय 2, वल्ली 2, मंत्र 18

8. वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति...

➢ तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली, अनुवाक 11

9. मातृदेवो भव। पितृदेवो भव...

➢ तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली, अनुवाक 11

10. सर्वं खल्विदं ब्रह्म...

➢ छान्दोग्य उपनिषद्, खण्ड 3.14.1

11. यस्मिन्सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूद्विजानतः...

➢ ईशावास्य उपनिषद्, मंत्र 7

12. न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो

➢ कठोपनिषद ,अध्याय 1 मंत्र 27 वल्ली 1

13 ॐ ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् ।
ईशावास्योपनिषद्, मंत्र 1

14 सत्यं वद। धर्मं चर।

➢ तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली 1 .11

15 **न जायते प्रियते वा विपश्चि-**

➢ कठोपनिषद्, अध्याय 2, वल्ली 2, मंत्र 18

संदर्भ

1. गीता
2. महाभारत वनपर्व
3. तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली, अनुवाक 11
4. कठोपनिषद।
5. -तैत्तिरीय उपनिषद्
6. छान्दोग्य उपनिषद्, खण्ड 3.14.1
7. तैत्तिरीयोपनिषद्
8. तैत्तिरीयोपनिषद , शिक्षावल्ली
9. तैत्तिरीयोपनिषद्
10. तैत्तिरीयोपनिषद्,
11. कठोपनिषद
12. ईशावास्योपनिषद्, मंत्र 1
13. तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली
14. कठोपनिषद्, अध्याय 2, वल्ली 2, मंत्र 18